SIMRJ ISSN: 2455-1511 Vol. III Issue-I Jul-Aug-Sep 2017

SANSKRUTI INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Journal homepage: http://www.simrj.org.in Journal UOI: 1.01/simrj

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का साधन – समुचित निर्देशन एवं परामर्श

डॉ. गिरधारी लाल शर्मा
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

निर्देशन, शिक्षा का अभिन्न अंग है तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु समुचित निर्देशन अत्यन्त आवश्यक है। आज भौतिकवादी युग में औद्योगिक क्रांति तथा संयुक्त परिवार के विघटन के कारण मानव अधिक तनाव युक्त जीवन व्यतीत कर रहा है। उसको जीवन के प्रत्येक स्तर पर अनुभवी व्यक्ति की सहायता महसूस होती है। अनुभवी व्यक्ति द्वारा दी जाने वाली सहायता ही निर्देशन कहलाती है। किन्तु यह अत्यन्त खेद का विषय है कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम अपने विद्यार्थियों को समुचित निर्देशन एवं परामर्श सेवा उपलब्ध नहीं करवा पाए हैं, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे विद्यार्थियों के विकास पर पड़ रहा है और वे अपनी क्षमताओं, शक्तियों का सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। फलस्वरूप उनका जो लाभ, राष्ट्र को तथा समाज को मिलना चाहिये था, वह नहीं मिल पा रहा है। इस दिशा में चिन्तन के साथ सकारात्मक प्रयासों की आवश्यकता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसको समाज का उपयोगी, सक्रिय एवं उत्पादक सदस्य बनाना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। निर्देशन, शिक्षा का अभिन्न अंग है तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु समुचित निर्देशन अत्यन्त आवश्यक है। निर्देशन की आवश्यकता, व्यक्ति को हमेशा से रही है, किन्तु पुरातन समय में संयुक्त परिवार प्रथा तथा जीवन का स्वरूप सहज होने से, व्यक्ति को निर्देशन परिवार के सदस्यों से ही प्राप्त हो जाता था, किन्तु वर्तमान में परिस्थितियां अत्यधिक परिवर्तित हो गई हैं। आज भौतिकवादी युग में औद्योगिक क्रांति तथा संयुक्त परिवार के विघटन के कारण मानव अधिक तनाव युक्त जीवन व्यतीत कर रहा है। उसको जीवन के प्रत्येक स्तर पर अनुभवी व्यक्ति की सहायता महसूस होती है। अनुभवी व्यक्ति द्वारा दी जाने वाली सहायता ही निर्देशन कहलाती है।

Scanned by CamScanner